अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता वर्ष

आमोद कारखानिस

दौड़

मई की कड़ी धूप। सूरज जैसे आग उगल रहा है। पतझड़ ने पहले से कई बड़े-बड़े पेड़ों को सुखा दिया है। उन्हें बे-पत्ती कर दिया है। और अब मई के तपते सूरज ने पानी के स्रोत भी सुखा दिए हैं। सूखी धरती में दरारें पड़ गई हैं। न पत्तियाँ, न पानी – जंगल जैसे सुनसान हो गया है। जीवन मानो थम-सा गया है।

और जून का महीना आता है...

दक्षिण से काले-काले बादल उमड़-घुमड़कर आते हैं – बारिश की पहली बूँदें पड़ते ही मिट्टी से सौंधी गन्ध उठती है! थमी ज़िन्दगी जैसे अचानक जाग उठती है – और शुरू हो जाती है, एक दौड़!!

अजब दौड़ है, गज़ब दौड़ है कि ये ज़िन्दगी यारों दौड़ है...

इधर दौड़ है, उधर दौड़ है ये जीना यारों दौड़ है...

बारिश की बौछारों के साथ ज़मीन के अन्दर सोए हज़ारों-हज़ार बीज जाग उठते हैं – नए जीवन की शुरुआत होती है। नए अंकुर पनपते हैं ज़मीन पर इधर-उधर, सभी जगह। पर, प्रकृति की खूबसूरती तो देखिए! इतने सारे बीज पनपना शुरू करते हैं – कुछ एक साथ, कुछ थोड़ा आगे-पीछे। सभी को चाहिए पानी, पोषक तत्व और प्रकाश भी।

यह दौड़ है उनकी समय के साथ।

उनके पास समय बहुत कम है। बीजों में जो खाना जमा है वो खत्म होने के पहले नए पौधों को स्थापित होना है। जड़ें फैलानी हैं जिससे वे ज़मीन से पानी और पोषक पदार्थ ले सकें। पत्तियाँ उगानी हैं। यही पत्तियाँ फिर प्रकाश संश्लेषण से खाना बनाएँगी। यह सब बीजों में जमा सीमित खाद्य पदार्थ के साथ करना है।

अभी तो यह मौसम की शुरुआत है। पानी अभी तक ज़मीन के नीचे गहराई तक रिसा नहीं है। बड़े-बड़े पेड़ जिनकी जड़ें ज़मीन में गहराई तक गई हैं अभी तक जागे नहीं हैं। छोटे पौधों के लिए यही मौका है। बड़े पेड़ पत्तियाँ उगाना शुरू कर देंगे तो ज़मीन तक कम धूप पहुँच पाएगी। पौधों को खाना बनाने के लिए आकाश की ज़रूरत है – उनके पास वक्त कम है।

और संघर्ष है जीने के लिए भी।

छोटे पौधे ऊँचे से ऊँचा पहुँचने की कोशिश में हैं। जो ऊपर हैं उनको प्रकाश का फायदा मिलेगा। वे ज़्यादा खाना बना पाएँगे और सफल होंगे!

तेज़ रोशनी का फायदा है, पर उसकी कीमत भी चुकानी पड़ती है। धूप यानी पत्तियों से ज़्यादा वाष्पीकरण; इसका मतलब यह हुआ कि जड़ों को ज़्यादा पानी सोखने के लिए मेहनत करनी पड़ेगी और, उसे ज़्यादा ऊँचाई तक पहुँचाना पड़ेगा।

कुछ पौधे जल्दी-जल्दी फूल-फलकर अपनी ज़िन्दगी चन्द महीनों में पूरी कर लेते हैं। कुछ में फूल पहले ही आ जाते हैं। प्रजनन का काम पूरा होने के बाद वे इत्मीनान से खाना बनाकर अपने कन्द (tuber) में जमा करते रहते हैं। इसका उपयोग अगले साल फूल उगाने के लिए किया जाएगा। ऊँचा उठना है तो मज़बूत, बड़ा तना चाहिए। इसे संयोग ही कहा जा सकता है कि कुछ बेलें आजू-बाजू के पेड़, लकड़ियों का सहारा लेकर ऊँचाई पर जाकर फैल जाती हैं। वहाँ इन पर बहुत सारे पत्ते आते हैं।

पेड़-पौधों में जब इतना कुछ हो रहा हो तो जन्तु-जगत इससे अछूता कैसे रहे? कुछ कीटों के अण्डे, कोष जो सोए हुए थे, जाग जाते हैं। उठो भई, बहुत सारे मुलायम स्वादिष्ट पत्ते उपलब्ध हैं। अण्डों से लार्वा निकलते हैं। और निकलते ही वे भुक्खड़ों की तरह खाना शुरू कर देते हैं – उनकी भी तो दौड़ है।

इल्ली से वयस्क तक की सभी अवस्थाएँ पूरी करने के लिए कुछ कीटों को पानी की, कुछ को इस वक्त फूटी नई पत्तियों की ज़रूरत होती है। थोड़ा ही समय है इन कीटों के पास ये सभी अवस्थाएँ पूरी करने के लिए। इन्हें साथी तलाशना है और अण्डे देने हैं जो अगले साल इसी प्रक्रिया को आगे ले जाएँगे। हाँ, साथ में खुद को बचाकर भी तो रखना है। छोटी-मुलायम इल्लियाँ किसी भी शिकारी – बहुत सारे पक्षियों, बड़े कीड़ों, छिपकलियों... का जी ललचा सकती हैं।

गर्मियों में जिन पक्षियों ने घोंसले बना लिए थे। वहाँ मादा अण्डे दे चुकी है। कइयों में बच्चे भी आ

चित्र : अतनु राय

पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को गर्मियों के जाने और बारिश के आने का बेसब्री से इन्तज़ार रहता है... फिर एक दिन आता है एक खबरी खबर लाता है... दुख भरे दिन बीते रे भैया... अब बरखा आई रे!!

यह खबरी है पाइड क्रेस्ट्ड कुकु। प्रवास के बाद अपने उत्तरी घर में लौटते हुए उसे मॉनसूनी हवाओं का फायदा मिलता है। हवाओं के आगे-आगे वह पश्चिमी तटों तक पहुँचती है – मॉनसून के एकदम पहले। इस पक्षी के यहाँ दिखने को मॉनसून आने के सूचक के रूप में देखा जाता है।

पाइड क्रेस्ट्ड कुकु

जंगली स्पाइडर लिली

फोटो: आमोद कारखानिस

मॉनसून के आने से जो एक दौड़ शुरू हो जाती है उसमें एक ऐसा पौधा है जिसकी शायद ही कोई बराबरी कर पाए और वो है – जंगली स्पाइडर लिली *(Pancratium parvum)*। यह पौधा पश्चिमी घाट में ही पाया जाता है। मॉनसून की पहली बौछारें पड़ते ही इस पर फूल आने लगते हैं। पहली बरसात के 24-48 घंटे बाद ही जंगल की पूरी ज़मीन पर फूल खिल जाते हैं। सभी फूलों का परागण होते ही इसकी पत्तियाँ बीज पैदा करने के लिए भोजन बनाने में जुट जाती हैं। अगले साल के लिए इसे कन्द में जमा करके रखा जाता है।

वैसे बारिशों का हीरा तो ज्वैल कीट ही है। क्या तो चमकदार रंग होते हैं इसके!! पर एक बात बता दूँ – ये रंग किसी रंगीन पदार्थ के कारण नहीं हैं। दरअसल, इस पर छोटी-छोटी महीन रचनाएँ हैं जो प्रकाश को बिखेरती हैं। इससे अलग-अलग कोणों से देखने पर अलग-अलग रंग दिखाई देते हैं।

हरे तने वाले पौधों के निकलते ही ये उसका रस चूसने पहुँच जाते हैं। चकमक

ज्वैल कीट

फोटो: आमोद कारखानिस

चुके हैं। ये छुटके बड़े खाऊ होते हैं। एक तो वे खाते ज़्यादा हैं, दूसरे बड़ी तेज़ी से बढ़ते हैं। उनके माँ-बाप दिन-रात इनके लिए खाना लाने में लगे रहते हैं।

और संघर्ष है जीने के लिए भी।

मादा एक घोंसले में अमूमन 2-3 अण्डे देती है। हर बच्चे की भरसक कोशिश होती है माता-पिता द्वारा लाए खाने से ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा पाने के लिए – धक्का-मुक्की, एक-दसरे पर चढ़ बैठना, लड़ना-झगड़ना, चोंच मारना, कमज़ोर को घोंसले से गिरा देना सब होता है यहाँ। जीने का संघर्ष जारी है।

बड़े पेड़ों पर अब नए पत्ते निकालना शुरू हो गए हैं। धीरे-धीरे ज़मीन तक पहुँचने वाली रोशनी कम होती जाएगी। छोटे पौधों की खुशहाली के दिन खत्म होने को हैं। पर, कहानी यहाँ खत्म नहीं होती। नए पौधे आते हैं। पौधों पर फूल आते ही कितने सारे कीड़े, मधुमक्खियाँ मण्डराने लगती हैं। कहानी आगे बढ़ती रहती है। ज़िन्दगी आगे बढ़ती है। नए आयाम, नए खिलाड़ी, नई रचनाओं के साथ – जीवन की विविधता को और समृद्ध बनाते हुए। चकमक